IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

वैदिक कालीन शिक्षा और बौद्ध कालीन शिक्षा प्रणाली का तुलनात्मक अध्ययन

डॉ. अरिमर्दन सिंह

विभागाध्यक्ष (शिक्षा विभाग), रजत वूमेन्स कॉलेज ऑफ एजुकेशन एंड मैनेजमेन्ट, लखनऊ.

शोध -सारांश-

भारत में शिक्षा के इतिहास की उत्पत्ति वैदिक युग से मानी जा सकती है, जो 1500-800 ई.पू. की अवधि है। 800-600 ई.पू. की अवधि को ब्राह्मणों का काल कहा जाता है। छठी शताब्दी ई.पू. भारतीय धर्म और विचार के इतिहास में एक महत्वपूर्ण युग है। इस अवधि में गौतम बुद्ध द्वारा स्थापित एक नए धर्म – बौद्ध धर्म का उदय हुआ। यह धर्म ब्राह्मणवादी काल में प्रचलित जाति व्यवस्था के विरुद्ध विद्रोह का परिणाम था। शिक्षा और अनुसाशन के सम्बन्ध में वैदिक और बौद्ध काल का अध्ययन विशेष महत्वपूर्ण है। वेदों के काल से लेकर बौद्ध धर्म के उदय तक, भारतीय समाज और संस्कृति में शिक्षा का परिप्रेक्ष्य और अनुसारण विभिन्न रूपों में विकसित हुआ।बौद्ध शिक्षा प्रणाली का मुख्य लक्ष्य बच्चे के व्यक्तित्व के सर्वांगीण और समग्र विकास को बढ़ावा देना है, चाहे वह बौद्धिक और नैतिक विकास हो, साथ ही शारीरिक और आध्यात्मिक विकास भी हो। गुरुकुल संस्था वैदिक काल में शिक्षा का प्रमुख स्रोत था। इसमें छात्र गुरु के आश्रम में रहते थे और उनके द्वारा विभिन्न विद्याओं का आध्यात्मिक और ज्ञानार्जन किया जाता था। यहां छात्रों को वेद, शास्त्र, विज्ञान, योग, वाणिज्य, नृत्य, वाद्य, चिकित्सा, गणित आदि की शिक्षा दी जाती थी। इस अध्ययन में, हम वैदिक और बौद्ध काल की शिक्षा और अनुसाशन प्रणालियों की तुलना करेंगे, जिससे हमें उन युगों की समाज-शैली, शिक्षा-प्रणाली, और विद्यार्थी जीवन की प्रकृति का समझने में सहायता मिलेगी।

महत्वपूर्ण शब्द- बौद्ध धर्म , भारतीय समाज, समाज-शैली , शिक्षा-प्रणाली, विद्यार्थी जीवन , अनुसाशन प्रणाली

प्रस्तावना :

वैदिक और बौद्ध कालीन शिक्षा के विद्यार्थी जीवन और अनुशासन प्रणाली का तुलनात्मक अध्ययन एक गहन और संवेदनशील विषय है। यह भारतीय संस्कृति के दो महत्वपूर्ण युगों के शैक्षिक प्रणाली की गहराई में जाने का अवसर प्रदान करता है। वैदिक काल में, शिक्षा का मुख्य उद्देश्य धार्मिक और नैतिक मूल्यों को संग्रहित करना था। विद्यार्थी जीवन और अनुशासन की प्रणाली गुरु-शिष्य परंपरा पर आधारित थी। विद्यार्थियों को गुरुकुल में रहकर अपने गुरु की देखरेख में शिक्षा प्राप्त करनी होती थी। वहीं, बौद्ध कालीन शिक्षा ने ज्ञान के विस्तार और विचारशीलता को बढ़ावा दिया। बौद्ध

विद्यालयों ने विद्यार्थियों को विभिन्न विषयों में शिक्षा प्रदान की, जिसमें धर्म, दर्शन, गणित, चिकित्सा, भूगोल, ज्योतिष, यात्रा आदि शामिल थे। इस तुलनात्मक अध्ययन के माध्यम से, हम भारतीय शिक्षा प्रणाली के विकास और परिवर्तन को समझने का प्रयास कर सकते हैं।

भारतीय समाज का इतिहास और संस्कृति अनेक युगों में विकसित हुआ है, जिसमें वैदिक और बौद्ध काल विशेष महत्व रखते हैं। इन युगों में शिक्षा और अनुसाशन की प्रणालियों का विकास बहुत महत्वपूर्ण था। वैदिक काल में वेदों के माध्यम से शिक्षा का प्रचार होता था, जबकि बौद्ध काल में ध्यान और विचार की प्रणालियों को अधिक महत्व दिया गया था। वैदिक काल में शिक्षा का मुख्य उद्देश्य धार्मिक और आध्यात्मिक विकास था, जबकि बौद्ध काल में विचार की उन्नति और मनोवैज्ञानिक अध्ययन को ज्यादा महत्व दिया गया। इन दोनों कालों में शिक्षा और अनुसाशन की प्रणालियाँ विभिन्न थीं, जो समाज के विकास और संरचना में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

प्राचीनकाल में भारत में विकसित होने वाली दो मुख्य शिक्षा प्रणालियों को क्रमशः वैदिक शिक्षा या हिन्दू-ब्राह्मणीय शिक्षा तथा बौद्धकालीन शिक्षा के रूप में जाना जाता है। बौद्धकालीन शिक्षा बौद्ध धर्म एवं दर्शन की सैद्धान्तिक मान्यताओं पर आधारित थी, परन्तु यह भी सत्य है कि बौद्ध धर्म भी एक भारतीय धर्म था तथा बौद्धकालीन शिक्षा भारतीय सामाजिक परिस्थितियों में ही विकसित हुई थी।

बौद्ध शिक्षा प्रणाली और लक्ष्य :

बौद्ध शिक्षा प्रणाली जीवन के मूल सिद्धांतों के आधार पर विकसित की गई थी। यह शिक्षा विद्यार्थी के नैतिक, मानसिक और शारीरिक विकास पर आधारित है। वह छात्रों को क्लब के नियमों का पालन करने में मदद करते हैं। 5वीं शताब्दी ईसा पूर्व में। इ। चौथी शताब्दी ईसा पूर्व में, बौद्ध शिक्षा मूल रूप से भगवान बुद्ध द्वारा सिखाई गई थी और इसकी मुख्य विशेषता यह थी कि यह मठवासी थी और इसमें सभी जातियों को शामिल किया गया था, जबकि उस समय भारत में जाति व्यवस्था व्यापक थी। बौद्ध शिक्षा प्रणाली का मुख्य लक्ष्य बच्चे के व्यक्तित्व के सर्वांगीण और समग्र विकास को बढ़ावा देना है, चाहे वह बौद्धिक और नैतिक विकास हो, साथ ही शारीरिक और आध्यात्मिक विकास भी हो।

बौद्ध शिक्षा के मुख्य लक्ष्य हैं:

- **चरित्र निर्माण** : चरित्र निर्माण के लिए आवश्यक नियम स्थापित किए गए और आत्म-नियंत्रण, करुणा और दयालुता पर अत्यधिक जोर दिया गया।
- **चरित्र विकास** :आत्म-नियंत्रण, स्वतंत्रता, आत्मविश्वास, आत्म-सम्मान, करुणा और सोच जैसी प्रमुख विशेषताओं के निर्माण के माध्यम से छात्रों के संपूर्ण व्यक्तित्व का विकास करना बौद्ध युग में शिक्षा के महत्वपूर्ण लक्ष्यों में से एक था।
- **समग्र विकास** : बौद्ध शिक्षा प्रणाली में, शिक्षा छात्र के शारीरिक, मानसिक और नैतिक विकास को ध्यान में रखती है; इसके अलावा, व्यावसायिक विकास की दृष्टि से कला, शिल्प और उद्योग के सभी क्षेत्रों में प्रशिक्षण भी दिया जाता है। रखा एवं प्रस्तुत किया गया। इस प्रकार व्यक्तित्व के विभिन्न पहलुओं के विकास पर समान ध्यान दिया गया।
- **बौद्ध धर्म का प्रसार** : बौद्ध दर्शन में धर्म को संस्कृति का एक भाग माना जाता है और संस्कृति को संरक्षित करके ही धर्म को संरक्षित किया जा सकता है। इसमें बुद्ध की शिक्षाओं का प्रसार भी शामिल था।

- **मोक्ष** : बौद्ध धर्म के अनुसार, अज्ञानता इस दुनिया में सभी दुखों का एकमात्र कारण है। इसलिए, बौद्ध काल में शिक्षा छात्रों को वास्तविक और सार्थक ज्ञान प्रदान करने पर केंद्रित थी। बौद्ध युग में, सच्चे ज्ञान का अर्थ मोक्ष प्राप्त करने के लिए धर्म और दर्शन के चार सत्यों को जानना और उनका अभ्यास करना था

बौद्ध शिक्षा प्रणाली की मुख्य विशेषताएं :

- **सम्पूर्ण व्यक्तित्व का विकास**: बौद्धकालीन शिक्षा का बदकालीन शिक्षा के उद्देश्य उद्देश्य व्यक्तित्व के ज्ञानात्मक, भावात्मक एवं क्रियात्मक तीनों पक्षों सम्पूर्ण व्यक्तित्व का विकास का विकास करना था।
- **बौद्ध धर्म क़ा प्रचार**: बौद्धकालीन शिक्षा का प्रमुख उद्देश्य चरित्र-निर्माण बौद्ध धर्म का प्रचार प्रसार एवं ग्रहण करना था, जिससे कि लोगों में निर्वाण की मात धर्म के प्रति श्रद्धा, विश्वास एवं आस्था बढ़े।
- **चरित्र**: निर्माण सादगीपूर्ण और पवित्र जीवन, ब्रह्मचर्य, का विकास संयम तथा सदाचार द्वारा विद्यार्थियों के चरित्र का निर्माण करना। राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय भावना
- **निर्वाण की प्राप्ति:** बौद्धकालीन शिक्षा का एक प्रमुख उद्देश्य का विकास जीवन के दुःख, कष्ट, रोग वं मृत्यु से मनुष्य को निर्वाण प्राप्त कराना था।
- **सामाजिक योग्यता और कुशलता का विकास**: शिक्षा के क्षेत्र में ज्ञान और कौशल का समन्वय इसी उद्देश्य की प्राप्ति के लिए किया गया था। इस काल में धर्म का अर्थ आध्यात्मिक एवं सामाजिक कर्तव्यों का पालन करने से लिया जाता था और व्यक्ति की शिक्षा उसे यह क्षमता प्रदान करती थी कि वह अपने आपको समाज का एक योग्य सदस्य बनाए।
- **राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय भावना का विकास:** बौद्धकालीन शिक्षा का एक उद्देश्य राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय भावना का विकास भी था। इसके लिए बौद्ध भिक्षु अपने देश और विदेश में भ्रमण करते थे और वे अपनी ही वेशभूषा, भाषा व आचार-विचार का प्रयोग करते थे। । उल्लेखनीय है कि बौद्ध शिक्षा प्रणाली के उपर्युक्त वर्णित उद्देश्य वर्तमान में भी अपनी प्रासंगिकता को बनाए हुए हैं। वर्तमान में शिक्षा को जीवन के मौलिक अधिकार के रूप में स्वीकार किया गया है, क्योंकि इसी से व्यक्ति का कल्याण सम्भव है।

बौद्ध काल में शिक्षा एवं अनुशासन:

बुद्धं शरणं गच्छामि, धम्मं शरणं गच्छामि, संघ शरणं गच्छामि – इन तीन प्रतिज्ञाओं में बौद्ध दर्शन का सम्पूर्ण अनुशासन समाहित है। बुद्ध धर्म और संघ की आज्ञाओं और आदेशों का पालन ही अनुशासन है, जिसमें प्रत्येक छात्र, शिक्षक और धर्मावलम्बी की पूर्ण श्रद्धा निहित है। बौद्ध दर्शन में वर्णित अनुशासन के स्वरूप को निम्नलिखित बिन्दुओं में समाहित किया जा सकता है- कर्म- भगवान् बुद्ध द्वारा निर्दिष्ट दस प्रकार के पापों (अकुशल कर्मों) से बचकर कुशल कर्मों के अनुष्ठान में लगना ही बौद्ध धर्म के आदर्शवादी अनुशासन का प्रत्यक्ष स्वरूप है। अकुशल कर्म हैं- 1.व्यापार (प्रति हिंसा), 2. मृषा वचन (झूठ), 3.परुष वचन (कटु वचन), 4.प्राणातिवाद (हिंसा), 5. मिथ्याचार (व्यभिचार), 6. अभिध्या (लोभ), 7. मिथ्या दृष्टि (झूठी धारणा), 8. पिशुन वचन (चुगली), 9. संप्रलाप (बकवाद), 10. अदन्ता दान (चोरी)। कर्म के अतिरिक्त पंचशील, उपोसथ व्रत, धर्म एवं अष्टांग मार्ग (सम्यक दृष्टि, सम्यक संकल्प, सम्यक वचन, सम्यक कर्म, सम्यक आजीविका, सम्यक व्यायाम, सम्यक स्मृति एवं सम्यक समाधि) के पालन की बात की गई है।

Figure 1 बौद्ध शिक्षा प्रणाली

वैदिक शिक्षा प्रणाली एवं लक्ष्य:

प्राचीन भारत में वैदिक काल के दौरान, शिक्षा का उद्देश्य व्यक्ति के समग्र विकास पर केंद्रित था। शिक्षा का उद्देश्य ज्ञान प्रदान करना, नैतिक मूल्यों को स्थापित करना और ऐसे कौशल विकसित करना था जो एक संपूर्ण जीवन जीने के लिए आवश्यक थे। इस अवधि के दौरान शिक्षा के प्राथमिक उद्देश्यों में सत्य (धर्म) की खोज, ज्ञान की प्राप्ति (विद्या), कर्तव्यों और जिम्मेदारियों की पूर्ति (कर्म) और आंतरिक शांति और आत्म-साक्षात्कार (मोक्ष) की प्राप्ति शामिल थी। शिक्षा प्रणाली का उद्देश्य ऐसे व्यक्तियों का पोषण करना था जो न केवल ज्ञानवान हों बल्कि नैतिक रूप से ईमानदार और आध्यात्मिक रूप से इच्छुक भी हों। वैदिक काल के दौरान शिक्षा जाति द्वारा निर्धारित व्यवसाय पर आधारित थी और शिक्षा का कार्य आजीविका प्रदान करना था। इसलिए ब्राह्मण वैदिक महाविद्यालयों में जाते थे और वेदों और कानून की पुस्तकों (धर्म-शास्त्र), घरेलू अनुष्ठानों (गृह्य सूत्र) आदि का अध्ययन करते थे। कुछ स्कूल दर्शन और तत्वमीमांसा में उच्च शिक्षा प्रदान करते थे। क्षत्रिय मार्शल आर्ट के अलावा वेदों का भी अध्ययन करते थे। वैश्य और शूद्र अपने काम से संबंधित विभिन्न शिल्पों का अध्ययन करते थे। कृषि, पशुपालन, बढ़ईगीरी, धातुकर्म, मिट्टी के बर्तन, भवन निर्माण, रथ-निर्माण, लोहारी आदि।

वैदिक शिक्षा की मुख्य विशेषताएं :

वैदिक शिक्षा का उद्देश्य छात्रों का सर्वांगीण विकास में ईश्वर की भक्ति, चरित्र निर्माण, व्यक्तित्व का विकास, नागरिक तथा सामाजिक कर्तव्यों का पालन, सामाजिक कुशलता की उन्नति कर उसे एक उपयोग सदस्य बनाना था जो देश की उन्नति तथा राष्ट्रीय संस्कृति के संरक्षण तथा प्राचीन भारतीय शिक्षा के प्रसार में अपना योगदान कर सके । गुरुकुल संस्था वैदिक काल में शिक्षा का प्रमुख स्रोत था। इसमें छात्र गुरु के आश्रम में रहते थे और उनके द्वारा विभिन्न विद्याओं का आध्यात्मिक और ज्ञानार्जन किया जाता था। यहां छात्रों को वेद, शास्त्र, विज्ञान, योग, वाणिज्य, नृत्य, वाद्य, चिकित्सा, गणित आदि की शिक्षा दी जाती थी।

- नेतृत्व के गुण विकसित करना, प्रबंधन सिद्धांत और अवधारणाएं
- टीम वर्क, आसानी और शांत दिमाग से समस्या सुलझाने की तकनीक
- दिमाग और उसकी जटिलता को समझना, बुद्धि और याददाश्त को तेज करना
- अहंकार को देखना और प्रबंधित करना
- आत्मा को आध्यात्मिक रूप से और वैज्ञानिक तरीकों से समझन

वैदिक काल शिक्षा में अनुशासन :

व्यक्तिगत नैतिकता और अच्छे आचरण पर जोर उपनयन से ही आरम्भ हो जाता था। विद्यार्थियों से आत्म – अनुशासन की उम्मीद की जाती थी। आत्मानुशासन शिक्षा का अभिन्न अंग था। शिक्षक के परिवार में रहने के कारण छात्रों को पुत्रवत आचरण करना होता था। गुरु अपने चरित्र और आचरण द्वारा उचित आदर्श छात्रों के समक्ष प्रस्तुत करता था। इन सभी कारणों से दण्ड अनुशासन के लिए आवश्यक नहीं था। फिर भी मानव प्रकृति के अनुसार छात्र कभी कभी

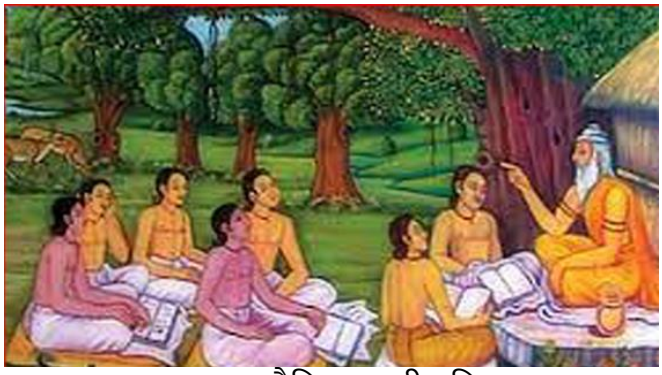

Figure 2 वैदिक कालीन शिक्षा

अनुशासन भंग करते थे। इस दशा में मनु ने गुरु को सलाह दी है की वह छात्र को समझा बुझाकर सही रास्ते पर लाये। आपस्तम्ब ने कहा है कि गुरु दोषी छात्र को कुछ समय के लिए अपने सामने आने से मना कर सकता है [कक्षा से निष्कासन की तरह]। गौतम ने शारीरिक दण्ड की अनुमति दी है पर यह भी कहा है की अत्यधिक शारीरिक दण्ड देने पर गुरु को राजा द्वारा दण्डित किया जा सकता था।

Table1 : तुलनात्मक अध्ययन

परम्परा	**वैदिक काल**	**बौद्ध काल**
शिक्षा का उद्देश्य	धार्मिक और आध्यात्मिक विकास	विचार की उन्नति और मनोवैज्ञानिक अध्ययन
शिक्षा के स्रोत	वेद , उपनिषद	बौद्ध सूत्र और शास्त्र ,
शिक्षा की विधि	गुरु-शिष्य परंपरा, श्रवण, मनन, ध्यान	बुद्ध की शिक्षा , व्यवहारिक उदाहरण और संवाद के माध्यम से ध्यान,
शिक्षण का माध्यम	संस्कृत	लोक भाषा
विद्यार्थी जीवन	कठोर एवं तपोमय	प्रशासन और आराम
शिक्षा की व्यवस्था	गुरुकुल	बौद्ध-मठ एवं विहार
शिक्षा प्रदान करने का कार्य	ब्राह्मण	किसी भी जाति का योग्य व्यक्ति

निष्कर्ष:

वैदिक कालीन शिक्षा में विद्यार्थी जीवन और अनुसाशन प्रणाली का महत्वपूर्ण ध्यान रखा जाता था, जबकि बौद्ध कालीन शिक्षा में समाजिक और नैतिक मूल्यों को बल दिया गया। दोनों कालों में विद्यार्थी को जीवन के मूल्यों और नैतिकता का ज्ञान दिया जाता था, परंतु उनके अनुसार अनुशासन का ढंग भिन्न था। इस अध्ययन से हम देखते हैं कि समाज और समाज के मानवीय मूल्यों को समझने में विभिन्न कालों के शिक्षा प्रणालियों का महत्व था। वैदिक शिक्षा घरेलू शिक्षा प्रणाली थी। इस प्रणाली में वन ही उनका विद्यालय था और सभी छात्र अपने गुरु के घर, आश्रम में रहते थे। उन्हें घरेलू माहौल में शिक्षा दी जाती थी। बौद्ध प्रणाली एक मठवासी शिक्षा प्रणाली थी। भिक्षुओं के निवास वाले मठ और विहार ही शिक्षण संस्थानों के रूप में विकसित हुए। वैदिक शिक्षा प्रणाली में गुरु अपनी इच्छानुसार शिक्षा प्रणाली को चलाते थे। बौद्ध शिक्षा प्रणाली में एक सामान्य संगठन होता था और उन्हें संघ के नियमों का पालन करना होता था।

सन्दर्भ -सूची-

- Vrinda Sengupta. बौद्धकालीन शिक्षा पद्धति. Int. J. Ad. Social Sciences 4(1): Jan. - Mar., 2016; Page 07-09.
- सिंह, डा॰0अनिल कुमार,बौद्धकालीन शिक्षा पद्धति 2008, कला प्रकाशन, बी.एच.यू. वाराणसी।
- झा द्विजेन्द्रनारायण, श्रीमालीकृष्णमोहन, प्राचीन भारत का इतिहास, दिल्ली विश्वविद्यालय।
- शर्मा, आर.एस., मैटेरियल बैकमाउन्ड आ॰फ ओरिजिन आ॰फ बुद्धिष्ट, सेन एण्ड राव (संस्करण) नई दिल्ली, 1998 ।
- टी. डब्ल्यू. रिजडेविड्स, बुद्धिष्ट इंडिया, कलकत्ता 1950।1-
- अरबिंदो की शिक्षा के आयाम श्री अरबिंदो आश्रम, पांडिचेरी।
- अग्रवाल, एस.के. 'शिक्षा के दार्शनिक एवं समाजशास्त्रीय सिद्धांत' मॉडर्न पब्लिकेशन, मेरठ।
- चौबे, एस.पी. 'भारतीय शिक्षा का इतिहास' विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा।
- हॉर्न, एच.ए. 'शिक्षा के मनोवैज्ञानिक सिद्धांत' मैकमिलन प्रकाशन, न्यूयॉर्क।
- कबीर, हुमायूं 'भारतीय शिक्षा दर्शन' बॉम्बे एशिया पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली।
- पाण्डे, राजकली 'हिन्दू धर्मकोश' हिन्दी संस्थान, उत्तर प्रदेश, लखनऊ।
- पांडे, रामशकल 'शिक्षा की ऐतिहासिक एवं दार्शनिक पृष्ठभूमि' विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा।